'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १३७ | वाराणसी, शनिवार, २८ नवम्बर, १९५९ | पच्चीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

हीरानगर (कठुआ) १७-९-'५९

तालीम के तीन आवश्यक विषय

इस तालीम में आध्यात्मिक बात नहीं है, वह होना जरूरी है। कारण यह समाजवादी राज्य है। नतीजा यह है कि तालीम में न तुलसीरामायण है, न कुरानशरीफ; न जपुजीसाहब है और न गीता। मेरी राय में ये किसी एक मजहब की किताबें नहीं हैं, ये सबके लिए हैं। ये रूहानियत सिखानेवाली किताबें हैं। अगर हम इन्हें न सीखेंगे तो देश का चारित्र्य नहीं बनेगा। वह गिर जायगा। फिर चारित्र्य न रहा तो देश भी न टिकेगा तो आप लोगों को ये तीन माँगें करनी चाहिए: (१) अंग्रेजी लाजमी न हो, हमारी राष्ट्रभाषा लाजमी की जाय। (२) काम की बातें खेती, बुनाई आदि सिखायी जायँ और (३) आध्यात्मिक बातें भी सिखायी जायँ।

स्वतंत्र शिक्षण की योजना हो

दूसरी बात यह है लोकतंत्र में लोगों की आवाज नहीं उठेगी तो सरकार भी ठीक काम न कर सकेगी। खुशी की बात है कि अब यहाँ हिन्दुस्तान का इलेक्शन-कमीशन (चुनाव-आयोग) और सुप्रीम कोर्ट लागू हो गया। इससे जम्हूरियत में जो रुकावटें थीं, वे दूर होंगी। लोगों की आवाज उठेगी तो उसका परिणाम, असर सरकार पर भी होगा।

> नयी तालीम के बारे में चर्चा चलती है कि उद्योग के जरिये तालीम दी जाय या निसर्ग के जरिये या परिस्थिति के जरिये? पर मैं कहना चाहता हूँ कि आत्मा में कुछ गुण होते हैं। उन गुणों को प्रकाश में लाना, यही तालीम का काम है। गुण-विकास से बढ़कर तालीम का कोई उद्देश्य नहीं है। उस गुण-विकास के लिए भले ही आप ग्रंथ का, कुरदत का, उद्योग का उपयोग कीजिये, लेकिन जहाँ गुण-विकास नहीं है, वहाँ तालीम नहीं है। गुण-विकास की प्रक्रिया कहाँसे कहाँ जाती है, उसे जरा हम देखें तो पता चलता है कि पचास गुणों का अधिष्ठान जो आत्मतत्त्व है, उसे टालकर गुण-विकास की चर्चा कैसे की जाती है? सब गुणों का अधिष्ठान है निर्भयता और निर्भयता का अधिष्ठान क्या है? क्या अपने पास शस्त्रास्त्र आ जाने से निर्भयता पैदा हो जाती है? क्या हमसे बड़े शस्त्र दूसरे के पास गये तो भी हमारी निर्भयता कायम रहेगी? समझने की जरूरत है कि सामने जो खड़ा है, वह मेरा ही रूप है। इस तरह आत्म-रूप का दर्शन हो तो निर्भयता आती है। आत्म-तत्त्व के बिना कौन-सा गुण स्थित होगा? इसलिए मेरे दिल में बार-बार विचार आता है कि यह भूदान-ग्रामदान बिलकुल आसान हो जायगा, अगर जो मूल चीज ब्रह्मविद्या की है, उसकी गहराई में हम जा सकेंगे। ●

यह तो सरकार की बात हुई! लोगों की बात क्या होनी चाहिए? मेरी राय में शिक्षा, तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए। आज की हालत में आप इतना कर सकते हैं कि 'एक्स्ट्रा कैरिक्युलर एक्टिविटी' जिसे कहते हैं, उसमें 'स्पेशल क्लासेस' हों। उनमें हिन्दी वगैरह सिखायी जाय। उनके लिए फीस न हो। स्कूल के शिक्षकों को यह पढ़ाने का काम करना चाहिए। इससे उनपर कुछ बोझ पड़ेगा। लेकिन उन्हें इसे सहन करना चाहिए। हमारी भाषा हमें सिखाती है। हमारे विद्यार्थी सीखते हैं, यह समझना चाहिए। ऐसे विषयों की परीक्षा भी हो। स्कूल के अलावा बाहर के लोग भी यह परीक्षा दे सकें। इस तरह लोगों को तालीम मिलनी चाहिए।

हिंदू धर्म का सार : ब्रह्मविद्या

आज एक भाई ने हिंदू धर्म के विषय में सवाल पूछा है। जनेऊ और चोटी—यह हिन्दू धर्म की निशानी नहीं है। धर्म में कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो जमाने के साथ बदलती हैं, लेकिन उसका जो सार होता है, वह बदलता नहीं है। इसलिए जनेऊ और चोटी—ये मुख्य चीजें नहीं हैं। सत्य, प्रेम, करुणा, धैर्य, साहस, परमेश्वर-निष्ठा, निर्भयता, निर्वैरता—ये ही मुख्य चीजें हैं। लेकिन हम इनकी परवाह ही नहीं करते, इनपर ध्यान ही नहीं देते। पुराने ऋषि जैसा करते थे, वैसा लिबास करना मुख्य चीज नहीं है। यह तो बदलनेवाली चीज है। न बदलनेवाली चीजें हैं: सत्य, प्रेम, मानवता आदि गुण।

आज के विज्ञान के जमाने में सब धर्मों की परीक्षा हो रही है। उससे स्पष्ट हो गया है कि ऊपर-ऊपर की चीजें—क्या पहनना, क्या खाना—धर्म नहीं हैं। इन्हें धर्म समझेंगे तो हम इस दुनिया में टिक न पायेंगे। हिंदुस्तान की सबसे बड़ी देन है—ब्रह्मविद्या। हम सब आत्मरूप हैं। हम सब एक ही आत्मा हैं। आत्मा की एकता के आधार पर ही यह विद्या है। मैंने बहुत दफा इसका जिक्र किया है कि ब्रह्मविद्या के बिना हमारा कोई भी काम आगे बढ़नेवाला नहीं है। इस जमाने में दूसरी बातें नहीं टिकेंगी। इसीलिए मैं गीता-प्रवचन का प्रचार करता हूँ। ●

[गतांक से समाप्त]

www.vinoba.in

स्वागत-प्रवचन

फिरोज़पुर (पंजाब) १९-११-'५९

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए केवल सेना से काम नहीं चलेगा

इन दस-बारह सालों में दुनिया में अजीबोगरीब परिवर्तन हुए हैं। ऐसे परिवर्तन कि जो पहले पाँच सौ साल में भी नहीं होते थे। यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने को कोई टाल नहीं सकता है और टालने की जरूरत भी नहीं है। विज्ञान कोई आज की बात नहीं है, वह तो प्राचीन काल से चला आया है। लेकिन इन दस-बारह सालों के अन्दर विज्ञान ने जो तरक्की की और जो दौड़ लगायी, उतनी तरक्की और दौड़ पिछले हजार सालों में नहीं हुई थी। चौदह साल पहले हिरोशिमा पर एक ऐटम बम गिरा, उसका नतीजा यह हुआ कि वह शहर खत्म हो गया और जापान को शरण आना पड़ा। जापानवालों ने समझ लिया कि यह एक ऐसा हथियार निकला है, जिसके मुकाबले में अपने पास कोई चीज नहीं है। इस हालत में लड़ना बेकार है। यूँ समझकर उन्होंने लड़ाई बंद की। उसके पहले जापान एक के बाद एक मुल्क अपने कब्जे में करता हुआ यहाँ आसाम तक आ पहुँचा था। लेकिन उसने एक बम के परिणामस्वरूप अपनी हार मानी। आज विज्ञान इतना आगे बढ़ा है कि अब उस बम से हजार गुनी अधिक ताकतवाले बम निकल गये हैं और 'आई० सी० बी० एम०' की भी ईजाद हुई है याने घर बैठे-बैठे दुनिया के किसी भी गोशे में बम गिराना हो तो गिरा सकते हैं। ऐसी ताकत इन्सान के हाथ में आयी है। हम चाँद तक पहुँच गये हैं। कल हमने लंदन के अखबार में चाँद के फोटो देखे। जैसे पृथ्वी पर जो पहाड़, समुन्दर वगैरह हैं, उनको हमने नाम दे रखे हैं, वैसे ही चाँद पर जो पहाड़, समुन्दर जैसा नजर आता है, उनको भी नाम दिये गये हैं और उनका नक्शा बनाया है। अब दूसरे ग्रहों पर पहुँचने की कोशिश चल रही है। यह सारा बता रहा है कि जिंदगी का बाहर का ढाँचा आज तक जैसा था, वैसा का वैसा हम रखेंगे, ऐसा कोई खयाल करे तो वह बिलकुल ही गया-बीता साबित होगा। वह पुराने जमाने का आदमी माना जायगा, जो ऐसे ख्वाब में रहेगा। अब तो जोरों के साथ बाहरी जिंदगी की शक्ल बदल रही है। हम किधर से किधर जा रहे हैं।

पटरी, इंजिन और डब्बे कैसे हों ?

साइन्स की ताकत नॉनमॉरल (अतिनैतिक) है। वह मॉरल (नैतिक) या इम्मॉरल (अनैतिक) नहीं है। वह एक तटस्थ शक्ति है, उसका उपयोग आप चाहे जैसा कर सकते हैं। आज अणु की ताकत हाथ में आयी है। पुराने जमाने में जब आग की ईजाद हुई थी, तब भी बहुत बड़ी ताकत हाथ में आयी थी और इन्सान की जिंदगी में फर्क पड़ा था। आग का उपयोग रसोई में भी हो सकता है और घर जलाने में भी हो सकता है। अग्नि तटस्थ है। वह सिर्फ एक पावर (शक्ति) है। उसमें अक्ल नहीं है। उस पावर के साथ अक्ल जोड़नी होती है। उस अक्ल को हम आत्मज्ञान कहते हैं। विज्ञान के साथ आत्मज्ञान को जोड़ना होगा। जैसे मोटर में दो यंत्र होते हैं, दिशा बतानेवाला और रफ्तार बढ़ानेवाला। दोनों मिलकर मोटरकार चलती है। उसी तरह से हिंदुस्तान में प्राचीन काल से ऋषियों ने जो देखा, यहाँपर जिसकी खोज हुई, वह आत्मज्ञान दिशा दिखायेगा और विज्ञान जिंदगी की रफ्तार बढ़ायेगा। रूहानियत की पटरी पर विज्ञान का इंजिन धड़ाधड़ दौड़ लगाये। पटरी रूहानियत की हो तो मामला महफूज है और गाड़ी ठीक दिशा में आगे बढ़ेगी। रूहानियत की पटरी और विज्ञान का इंजिन हो, फिर उसके साथ जिंदगी के डब्बे जोड दिये जायँ तो हम तेज रफ्तार से आगे बढ़ेंगे। फिर हमें कोई खतरा नहीं रहेगा। हम ठीक मुकाम पर ही पहुँचेंगे। लेकिन पटरी गलत रही तो इंजिन हमें कहाँ ले जायगा, पता नहीं।

दिमाग विज्ञान के लायक हो, दिल रूहानियत के लायक

इस हालत में आप जैसे नागरिकों पर जिम्मेवारी है कि अपना दिमाग विज्ञान के लायक बनायें और दिल रूहानियत के लायक बनायें। विज्ञान के कारण दिमाग बहुत बडा बन गया है। पुराने जमाने के बड़े-बड़े आलिमों को जो इल्म नहीं था, वह आज के बच्चों को है। अकबर बादशाह को भूगोल का जितना ज्ञान था, उससे ज्यादा ज्ञान आज के स्कूल के बच्चों को है। इस हालत में हमारा दिल पुराना, तंग, छोटा, कमजोर रहा, वही पुराना गुस्सा, हसद, जजबा रहा तो बड़े दिमाग की और छोटे दिल की टक्कर होगी। नतीजा यह होगा कि इन्सान की गाड़ी गढ़े में गिर जायगी, इन्सान और इन्सानियत का एकसाथ खात्मा होगा। इसलिए हमें अपने दिल और दिमाग को आये हुए जमाने के लायक बनाना चाहिए। याने दिमाग ढंडा होना चाहिए और दिल में किसी तरह का जजबा नहीं होना चाहिए। अक्सर लोग कहते हैं कि यहाँ बड़ी सरगर्मी से कशमकश चल रही है। इसपर मैं कहता हूँ कि अब सरगर्मी से नहीं, सरठंडे से और दिलगर्मी से काम होना चाहिए। पुराने जमाने की तरह जरा-जरा सी बात पर जजबा पैदा हो जाय, सर गर्म हो जाय तो इन्सान खत्म हो जायगा। इसलिए काम तो तब बनेगा, जब नये जमाने के लायक नया मानव बनेगा।

एकता के लिए क्या बाहरी आक्रमण की जरूरत है ?

आप जानते हैं कि अभी हिन्दुस्तान की सीमा पर खतरा पैदा हुआ है। इससे कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक हर पढ़ा-लिखा नागरिक फिक्र महसूस कर रहा है। हमें समझना चाहिए कि ऐसे खतरे तो आये दिन आयेंगे ही। लेकिन अगर हमने अपना दिल और दिमाग तैयार रखा हो तो उनका हमपर कोई असर नहीं होगा। आजकल हिन्दुस्तान में कितने झगड़े चल रहे हैं! जबानों के झगड़े! जातियों के झगड़े! मजहबों के झगड़े! एक ही मजहब के अंदर कई झगड़े! जैसे यहाँ गुरुद्वारा-प्रबंधक-समिति के चुनाव में एक ही सिख कौम के अंदर झगड़े चल रहे हैं। ये सब झगड़े देश में पहले से थे ही और अब उन्हें पूरा करनेवाले नये झगड़े पैदा हुए हैं, सियासी झगड़े। सियासत में पार्टी के झगड़े, एक ही पार्टी में दो गुट के झगड़े, एक ही गुट में व्यक्तियों के झगड़े! अगर ये सारे झगड़े कायम रखते हैं तो हम ही देश में खतरा बनाते हैं और बढ़ाते हैं। इन दिनों लोग कहते हैं कि 'खबरदार! हममें चाहे जितने भेद हों, लेकिन चीन के साथ लड़ने का मौका आयेगा तो सब एक होंगे।' इसपर मैं उनसे पूछता हूँ कि भाइयो, क्या आपको एक होने के लिए बाहर की आपत्ति की जरूरत है ? अगर यही हो तो मेरे जैसे को भगवान से

www.vinoba.in

प्रार्थना करनी पड़ेगी कि हे भगवान, इस देश पर बाहर से आफत भेज दो, ताकि ये लोग एक हो जायँ। हमें समझना चाहिए कि अगर एक होने की यही एक तरकीब हो, दूसरी कोई तरकीब न हो तो हिंदुस्तान खतरे से खाली नहीं है। खतरा तो अंदर ही पड़ा है। राजाजी पंडित नेहरू की निंदा करें, पंडित नेहरू राजाजी की निंदा करें, कृपालानीजी दोनों की निंदा करें, दोनों कृपालानीजी की निंदा करें तो दुनिया तीनों की निंदा करेगी। यही चलता रहेगा तो देश में कोई श्रद्धा नहीं रहेगी, देश क्षीण होगा, तितर-बितर होगा। आज चीन, रूस, इंग्लैंड वगैरह देशों की क्या हालत है, जरा सोचो। वहाँ-पर जो तय होता है, उसके पीछे करोड़ों लोग लगते हैं और अपने देश में ? पचास फिरके और उनके पचास झगड़े। यह बहुत बड़ा देश है, अगर एकता रही तो बड़े देश की बहुत ताकत बन सकती है। देश में एकता हो तो क्या मजाल है किसीकी कि हमारी तरफ बुरी निगाह से देखे। लेकिन एकता न हो तो देश की बड़ाई, विशालता ही कमजोरी, खतरा साबित होगी। आप कितने फ्रंट पर फौज भेजेंगे ? पाकिस्तान के फ्रंट पर भेजेंगे ? बर्मा तक फैली हुई लंबी-चौड़ी सीमा पर ? कहाँ-कहाँ फौज भेजेंगे ? अगर उधर फौज के बल पर सब करना हो और अंदर पुलिस के आधार पर काम करना हो तो क्या हालत होगी ?

मूल में खतरा किससे है ?

अभी कुछ लोग बोल रहे हैं कि चीन का खतरा पैदा हुआ है, इसलिए पंचवर्षीय योजना को बंद करो और योजना पर जो पैसा सर्फ होता है, वह फौज पर सर्फ करो। क्या यह भी कोई अक्ल है कि गुर्बत मिटाने के काम पर सर्फ होनेवाला पैसा बंद हो ? अगर देश में गुर्बत कायम रही तो चीन या दूसरे किसी भी देश से जो खतरा है, उससे सौ गुना खतरा रहेगा। यह मत सोचो कि सिर्फ फौज के बल से आप बचनेवाले हैं। हिटलर ने स्टालिनग्रेड पर अपनी कुल ताकत लगायी। लेकिन लड़ाई में उसे हारना पड़ा, क्योंकि रूस के लोगो ने एकदिल होकर बहुत बड़ा पराक्रम किया। सबने सोचा कि हमारे लिए बड़ा खतरा है। इसलिए वहाँके मामूली किसान और मजदूर भी लड़ाई में कूद पड़े। क्या यहाँकी फौज में हरिजनों को भेजेंगे ? क्या उनके मन में देश के लिए मर मिटने का जजबा पैदा होगा ?

पानीपत में हुई अफगान और मराठों की लडाई की कहानी है। अहमदशाह अबदाली बहुत बड़ा जनरल था। वह मराठों की रसद तोड़कर फिर हमला करना चाहता था। कई दिनों तक दोनों फौजें आमने-सामने खड़ी रहीं। वह हमला नहीं कर रहा था। एक दिन शाम को टहलते हुए उसने देखा कि मराठों की फौज में छोटी-छोटी आगें लगी हुई हैं। उसने अपने सरदार से पूछा कि यह क्या है ? सरदार ने कहा कि ये लोग एक-दूसरे के हाथ का नहीं खाते, इसलिए अलग-अलग रसोई पक रही है। अहमदशाह ने कहा, "ऐसा है, तब तो मैंने इन्हें जीत ही लिया" और वही हुआ। जो एक-दूसरे के हाथ का नहीं खायेंगे, एक-दूसरे से परहेज करेंगे, एक-दूसरे को नीच समझेंगे, वे कंधे से कंधा लगाकर लडेंगे कैसे ? आज भी हरिजनों को कुँओं पर पानी नहीं भरने दिया जाता है तो क्या आफत के मौके पर हरिजन देश के लिए लडेंगे ? अगर दलित देश के लोगों के लिए मन में शक हो तो उन्हें फौज में रखा जायगा ? क्या हिंदुओं के मन में मुसलमानों के लिए शक हो तो उन्हें फौज में रखा जायगा ? हिन्दू और सिखों के मन में एक-दूसरे के लिए शक हो तो किसको फौज में रखा जायगा ? इस तरह एक-दूसरे के लिए शक और दहशत हो तो अपनी फौज कैसे बचेगी और फौज बनी तो भी कितनी फौज और कितने फ्रंट पर लड़ेगी ? फौज पर कितना खर्चा किया जायगा ?

गुर्बत कायम रखकर कैसे लड़ेंगे ?

अगर लड़ाई छिड़ जाय तो अनाज के दाम आसमान तक चढ़ेंगे। आज भी हमें हर साल सौ करोड़ रुपये का अनाज बाहर से मँगवाना पड़ता है तो फिर लड़ाई के वक्त पर क्या होगा ? लाखों लोग खाना न मिलने के कारण मर जायँगे तो क्या लड़ाई चलेगी ? देश में गुर्बत कायम रखकर, अनाज की कमी रखकर आप किस बल से लड़ेंगे ? सिर्फ फौज के बल से नहीं लड़ा जाता। लड़ने के लिए अन्दर का बल चाहिए। अन्दर का बल बनावटी नहीं हो सकता। बाहर से हमला हो तो एक होंगे, ऐसे खयाल से काम नहीं बनेगा। अन्दर जहर पड़ा हो तो एक कैसे हो सकोगे ? १९४३ की बात है। उस वक्त हम जेल में थे। देश पर अंग्रेजों की हुकूमत थी। बंगाल में अकाल पड़ा। अंग्रेजों की सरकार के हिसाब से तीस लाख लोग कलकत्ते की सड़कों पर मर गये। साइन्स के जमाने में, जब कि सब जगह रेलवे मौजूद है, तीस लाख लोग भूख से मर जायँ, यह क्या बात थी ? जेल में हम चर्चा करते थे कि अंग्रेजों की वजह से यह सारा हुआ। याने दोष अंग्रेजों के मत्थे डालकर हम आराम से तीन दफा खाते थे। मान लीजिये कि अब दुबारा ऐसा हो जाय तो क्या अंग्रेज उसकी जिम्मेवारी उठायेंगे ? अब हमारा ही राज्य चलता है। इस राज्य को हम जैसा भी चलाना चाहें, चला सकते हैं। इसलिए लड़ाई शुरू हो और गाँवों में पूरा अनाज न हो तो देश की क्या हालत होगी ? आज गाँव में सबके लिए पूरा अनाज नहीं रहता है, क्योंकि कुछ लोग जमीन के मालिक बन बैठे हैं। मालिक अपने लिए पूरा अनाज रखकर बाकी अनाज बेचते हैं, मजदूरों का खयाल नहीं करते हैं। गाँव के सब लोगों के लिए सालभर का पूरा अनाज रहता है और बाकी सबको खरीदना पड़ता है। अगर गाँव के लोगों पर अनाज खरीदने की नौबत आयेगी तो अनाज के दाम ऊपर चढ़ने से लाखों लोग भूख से मरेंगे। क्या उस वक्त लोग यह सोचेंगे कि धन्य है हमारी भारत सरकार, वह बहुत अच्छी है, हम उसके लिए मर मिटेंगे ?

पंडित नेहरू के पीछे नहीं, आगे रहो

लोग कहते हैं कि हम पंडित नेहरू के पीछे हैं। मैं कहता हूँ कि आपको तो पंडित नेहरू के आगे जाना चाहिए। पीछे रहने से नहीं चलेगा। इस जमाने में सेनापति पीछे रहता है, सिपाही फ्रंट पर लड़ते हैं। इसलिए देश का काम तब बनेगा, जब आप कहेंगे कि हम पंडित नेहरू के आगे हैं। आगे रहने के मानी यह हैं कि पंडित नेहरू को गाँव-गाँव का इन्तजाम नहीं करना पड़ता। हम ही गाँव-गाँव का इन्तजाम कर लेते हैं। अगर आप उनके पीछे रहेंगे तो उन्हें फ्रंट की भी चिंता करनी पड़ेगी और गाँवों की भी चिंता करनी पड़ेगी। फिर दो चिंताओं के बीच वे पीसे जायँगे। इसलिए आपको यह समझना चाहिए कि सिर्फ

www.vinoba.in

फौज के बल से देश नहीं टिकेगा। आपका उस चीन से मुकाबला होगा, जहाँ अनाज की कमी नहीं है। चीनवाले तो दूसरे देशों को अनाज भेजते हैं। ऐसे देश से मुकाबला करने की बात करते हो और यह कहते हो कि हम पंडित नेहरू के पीछे हैं तो कैसे चलेगा? उनसे आगे जाओ। गाँव-गाँव का इन्तजाम करो, तभी देश सुरक्षित रह सकेगा।

लोग हमसे पूछते हैं कि बाबा, आप भूदान-ग्रामदान और शांति-सेना की बात करते हैं तो लड़ाई की हालत में आपके काम का क्या होगा? मैं जवाब देता हूँ कि लड़ाई छिड़ जाय तो आपकी पंचवर्षीय योजना 'हाऊस ऑफ कार्डस्' की भाँति गिर जायगी और ग्रामदान का कार्यक्रम जोरों से चलेगा। येलवाल में सब पक्षों के नेताओं के सामने मैंने कहा था कि भूदान-ग्रामदान को हम 'डिफेन्स मेजर' कहते हैं। यह 'सेकंड लाइन ऑफ डिफेन्स' है या 'फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेन्स' है, आप ही तय कीजिये। लेकिन समझना चाहिए कि देश में अंदरूनी ताकत रही तो फौज लड़ सकेगी। अंदर सब पोल हो तो पोल-ढोल बजानेवालों से लड़ा नहीं जायगा। इसलिए यह होना चाहिए कि ठोस योजना के साथ-साथ आपकी फौज काम कर रही है, सबका दिल एक है। हमने गाँव-गाँव की योजना करके गाँवों को बचा लिया है।

घूमने का प्रयोजन

लोग मुझसे पूछते हैं कि बाबा, आप इस तरह गाँव-गाँव क्यों घूमते हो? क्या आप थकते नहीं? मैं जवाब देता हूँ कि इस बुढापे में मेरे लिए थकना आसान था, लेकिन मैं नहीं थकता हूँ, क्योंकि मैं अपनी आँखों के सामने देश का नाश देख रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ कि हम एक-दूसरे को मदद नहीं करेंगे, मजदूरों को, गरीबों को अपने परिवार में शामिल नहीं करेंगे तो हिंदुस्तान की आजादी का नाश होगा। जो अंधा होता है, वह खंभे से टकराता है। आँखवाला खंभे को देखता है, इसलिए उसे टालकर आगे बढ़ता है। परमात्मा की कृपा से मैं आँखवाला हूँ। मैं देख रहा हूँ कि आगे क्या होनेवाला है। इसलिए आपको आगाह करने के लिए एक भी दिन की फुर्सत लिये बिना मैं घूम रहा हूँ। मैं अपनी दुबली आवाज आपके कानों तक पहुँचा रहा हूँ। आगे क्या होगा, यह तो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। मैंने अपना फर्ज अदा किया। इससे ज्यादा मैं क्या कर सकता हूँ?

इलेक्शन के परिणाम

मैं किसी पार्टी का नहीं हूँ। न मैं आगे कोई पार्टी बनानेवाला ही हूँ। मैं तो पार्टियों में विश्वास ही नहीं करता। मैं मानता हूँ कि पश्चिम से हमने जो जम्हूरियत का तरीका लिया, उसमें फर्क करना जरूरी है। जम्हूरियत का तरीका सबसे बेहतरीन है, लेकिन हमने इंग्लैंड से वह तरीका जैसा का तैसा लिया। हमने सोचा भी नहीं कि इंग्लैंड और भारत की हालत में कितना फर्क है। इंग्लैंड में एक ही जबान है, यहाँ चौदह जबानें हैं। इंग्लैंड में एक ही मजहब है, यहाँ कई मजहब और उसमें भी कई पंथ हैं। इंग्लैंड में जातिभेद नहीं है, यहाँ इतनी जातियाँ हैं कि जैसे पेड़ की पत्तियाँ। इंग्लैंड में विज्ञान काफी विकसित हुआ है, हिंदुस्तान उसमें बहुत पिछड़ा हुआ है। इंग्लैंड में दुनियाभर की संपत्ति इकट्ठा हुई है, हिन्दुस्तान पिछले दो सौ साल से चूसा गया है। यहाँपर मुश्किल से फी आदमी पौन एकड़ जमीन है, जिसपर हमारा सारा दारोमदार है। इंग्लैंड में पार्लमेंटरी डेमोक्रेसी चार सौ साल से विकसित होती आयी है। यहाँ हमने बारह साल पहले वहाँसे लाया हुआ पौधा, जैसा का तैसा लगाया है। इसका नतीजा क्या हुआ? राजा राममोहनराय से लेकर गांधीजी तक सबने जिस जातिभेद पर प्रहार किया और जो जातिभेद मरने की तैयारी में था, उसे इस इलेक्शन ने जिलाया। इसलिए समझना चाहिए कि हमने पश्चिम से जो तरीका लिया है, उसमें यहाँकी अबोहवा के मुताबिक फर्क करना जरूरी है।

आज देश में जगह-जगह असंतोष है, कशमकश चल रही है। इस हालत में हमारी ही सभाओं में लोग शांति से सुनते हैं। जैसे तपी जमीन बारिश का पानी चूस लेती है, वैसे ही लोगों के दिल बारह साल से तपे हुए हैं। उन्हें इस विचार से ठंडक पहुँचती है। लोग कहते हैं कि यह विचार तो अच्छा है, लेकिन यह व्यवहार में कैसे आयेगा? मैं तो आज यहाँ हूँ और कल यहाँसे जाऊँगा। मैंने अपना विचार सुना दिया। अब भगवान आपको जैसा सुनायेगा, वैसा आप करेंगे। करना या न करना आपकी मर्जी की बात है। जो करना है, करो और उसका परिणाम भुगतो। हम तो मजे में घूमेंगे। हमें इसकी कोई पर्वाह नहीं कि लोगों ने हमारी बात मानी या नहीं मानी। हम तो बेपर्वाह होकर घूमते हैं। स्वामी रामतीर्थ कहा करते थे कि दुनिया में जो अच्छाई चल रही है, वह सब मुझमें चल रही है और जो बुराई चल रही है, वह सब मुझमें चल रही है, वैसा ही मुझे भी लगता है। "चलती है ट्रेनें फर फर मुझमें मुझमें मुझमें। घूमते हैं योगी दर दर मुझमें मुझमें मुझमें। लड़ते हैं वीर मर मर मुझमें मुझमें मुझमें।" तुमको लड़ना है तो लड़ो, मरना है तो मरो। हम समझते हैं कि यह सब हमारे विशाल हृदय में ही चल रहा है। यह सब भगवान की लीला है। हमें उसका कोई सुख-दुःख नहीं है। हमें इसी की खुशी है कि हमने अपना फर्ज अदा किया। अगर आप इस विचार के मुताबिक काम करते हैं तो आप देखेंगे कि हमारे देश के लिए कोई खतरा नहीं है।

●●●

अनुक्रम

१. तालीम के तीन आवश्यक विषय
हीरानगर १७ सितम्बर '५९ पृष्ठ,, ७९५
२. राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए केवल सेना से काम नहीं चलेगा
फिरोजपुर १९ नवंबर '५९ ,, ७९६

●

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।